कालिदास के ग्रंथों में संगीत

- गुरु-शिष्य परंपरा प्रचलित थी।
- नाटकों का आरंभ वृन्द संगीत से हुआ करता था
- नाट्य आयोजन में पुष्कर नामक वाद्य- प्रयुक्त होता
- शिव की प्रार्थना में रागों का गायन कालिदास के ग्रंथों में मिलता है।

* चलित तथा प्रेरणा नामक नृत्य का प्रयोग होता था।
* कालिदास के रचनाओं में साम तथा गान्धर्व का उल्लेख, संगीत तथा संगीतक शब्दों का उल्लेख मिलता है।
* राग शब्दों का उल्लेख मिलता है जातिशब्दावली
* अभिज्ञान शाकुन्तलम् में राग शब्द का प्रयोग अनेक बार हुआ है।
* सूत्रधार ग्रीष्म ऋतु के अनुकूल गान करने को नटी को कहते थे।
* यथा संवाद, उपोहन, तान इत्यादि शब्दों के प्रयोग मिले,
* वाद्य के तीन प्रकार प्रचलित थे - तत, वितत, सुषिर
* तन्त वाद्य - वीणा, तथा वल्लकी
* कालिदास ने रघुवंश में परिवादनी वीणा का उल्लेख किया है।
* रघुवंश के अन्तिम राजा अग्निवर्ण पुष्कर वाद्य बजाते थे।
* मुरज वाद्य के करणों तथा बोलों का उल्लेख कुमार सम्भव में हुआ
* मालविकाग्निमित्र की प्रमुख पात्रा नृत्य सीखती थी
* गुप्तकालीन संगीत के प्रामाणिक आधार [illegible] अभिलेखों तथा सिक्कों से उपलब्ध होते हैं,